ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2018; 4(1): 499-501
www.allresearchjournal.com
Received: 16-11-2017
Accepted: 22-12-2017

डॉ. सुषमा दयाल
इतिहास विभाग, भूपेंद्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ. सुषमा दयाल
इतिहास विभाग, भूपेंद्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा, बिहार, भारत

महात्मा गांधी की अहिंसा नीति: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. सुषमा दयाल

सारांश
इस अध्ययन के अंतर्गत गांधी की अहिंसा रूपी नीति का सही अर्थों में विश्लेषण कर, इस नीति के स्वरूप का तथा तत्त्वों का विश्लेषण किया गया है। इसके अतिरिक्त विश्व शांति में गांधी जी के अहिंसा वादी प्रयास तथा प्रथम विश्व युद्ध के दौरान गांधीजी के दृष्टिकोण के मध्य परस्पर विरोधाभास की स्थितियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन भी सम्मिलित किया गया है। अतः यह अध्ययन इस बात की समीक्षा करता है कि विभिन्न धार्मिक ग्रंथो का प्रभाव गांधी के चिंतन पर सर्वदा दृष्टिगोचर रहा है । जिसके अन्तर्गत गांधी जी का अहिंसा रूपी यह सिद्धांत विश्व भर के समस्त जीवो तथा मानवों के कल्याण में सदा सर्वोपरि माना गया है ।

कूट शब्द: अहिंसा नीति, विश्व शांति, अहिंसा वादी

प्रस्तावना:
अहिंसा का अर्थ होता है - हिंसा ना करना। इसके व्यापक अर्थ में किसी भी प्राणी को तन, मन, कर्म, वचन और वाणी से कोई नुकसान ना पहुंचाना सम्मिलित है। अहिंसा को एक विचार और फिर एक सिद्धांत के रूप में विकसित वाले महापुरुषों में भगवान बुद्ध और महावीर स्वामी के पश्चात महात्मा गांधी का स्थान आता है । अहिंसा में ना केवल महात्मा गांधी को अटूट विश्वास था वरन् यह एक ऐसा सिद्धांत है जो भारत की परंपरा में कूट-कूट कर भरा है। अहिंसा का अर्थ केवल हत्या ना करना यह दूसरों को हानि ना पहुंचाना यही नहीं है अहिंसा का वृहद अर्थ है विचारों, शब्दों और कृत्यों में किसी को भी हानि पहुंचाने से दूर रहना। [2] अहिंसा के बारे में गांधीजी कहते थे कि - मैं केवल एक मार्ग जानता हूं वह है अहिंसा का मार्ग । हिंसा का मार्ग मेरी प्रकृति के विरुद्ध है। मैं स्वप्नदृष्टा नहीं हूं । मैं स्वयं को एक व्यावहारिक आदर्शवादी मानता हूं। अहिंसा का अर्थ केवल ऋषियों और संतों के लिए नहीं है । यह सामान्य लोगों के लिए नहीं है । जिस प्रकार हिंसा पशुओं का नियम है उसी प्रकार अहिंसा मानव का नियम है। पशु की आत्मा सुप्त अवस्था में होती है और वह केवल शारीरिक शक्ति को ही जानता है। जिन ऋषियों ने हिंसा के बीच अहिंसा की खोज की, वे न्यूटन से अधिक प्रतिभाशाली थे, वे स्वयं वेलिंगटन से भी बड़े योद्धा थे। शस्त्रों के प्रयोग का ज्ञान होने पर भी उन्होंने उसकी व्यर्थता को पहचाना और शांत संसार को बताया कि उसकी मुक्ति हिंसा से नहीं अपितु अहिंसा में है।

अध्ययन का उद्देश्य
इस अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य गांधी की अहिंसा नीति के वास्तविक उद्देश्य का प्रस्तुतीकरण हैजिसके अंतर्गत निम्न बिंदुओं का अध्ययन किया गया है।
गांधी के अहिंसात्मक नीति के स्वरूप का पुनरावलोकन करना ।
गांधी की अहिंसा नीति का विश्व तथा भारत के संदर्भ में अध्ययन करना।

अहिंसात्मक नीति का स्वरूप

निषेधात्मक रूप में अहिंसा

किसी जीव को दुर्भावना से क्रोध या स्वार्थ से चोट पहुंचाने के इरादे से दुख ना देना निषेधात्मक अहिंसा के अंतर्गत आता है। गांधीजी के अनुसार कठोर शब्द, कठोर निर्णय, क्रोध, घृणा, दुर्भावना, अत्याचार, अपमान किसी के आत्मसम्मान को चोट पहुंचाना आदि सभी हिंसा है।[8] टॉलस्टाय की तरह ही गांधीजी अहिंसा में हिंसा के समावेश करने के खिलाफ हैं उनके अनुसार यह दूध में जहर मिलाने के समान है।

निरपेक्ष रूप में अहिंसा

अपेक्षा हिंसा में सभी प्रकार की हिंसा से पूर्ण मुक्ति की बात कही गई है। गांधी के अनुसार जो आदर्श जीवन में सिद्ध किया जा सकता है वह वास्तव में ऊंचा आदर्श नहीं हो सकता अनवरत प्रयास हमारी आध्यात्मिक प्रगति का आधार है। [8] प्लेटो की तरह गांधी भी मानते हैं कि अहिंसा और प्रेम के द्वारा ही विश्व का संचालन होता है।

विधायक दृष्टि से अहिंसा

गांधीजी अहिंसा को विधायक तथा गत्यात्मक शक्ति मानते हैं उनके अनुसार अहिंसा का प्रेम हानि लाभ का सौदा नहीं है। बल्कि यह अच्छाई पर आधारित है सच्चा तथा शुद्ध प्रेम अपने को मिटा कर भी प्रतिफल नहीं मांगता इसलिए वह समस्त जीवो में अपने को देखता है जो हम से घृणा करता है उनमें भी प्रेम करता है। [8]

गांधी के विचारों में अहिंसा

गांधीजी हमेशा अहिंसक नीति से कार्य करने का सुझाव देते थे। उनके अंदर बचपन से ही अहिंसक तत्वों ने जड़े जमा ली थी उनकी मां पुतलीबाई अत्यंत धार्मिक व सदाचारी महिला थी। वह गांधी जी को धार्मिक कथाएं व व्रत उपवास के महत्व बताती थी। मां से ही उन्होंने नियम संयम व्रत उपवास और प्रार्थना सीखें। अतः उनके वैष्णव परिवार का उनके अहिंसा वादी दृष्टिकोण पर गहरा प्रभाव पड़ा।[1] इसके अतिरिक्त एक और गांधी रस्किन के 'अन टू दिस लास्ट' बाइबल के 'सरमन ऑन द माउंट', थोरों के' सिविल डिसऑबेडिएंस 'तथा टॉलस्टॉय के' ब्रेड लेबर' से प्रभावित हुए। वहीं दूसरी ओर हिंदू संस्कृति की आध्यात्मिक परंपरा और गीता के निष्काम कर्म योग ने उन्हें अहिंसा वादी बना दिया । गांधी अहिंसा को हिंदू धर्म की अद्वितीय दिन मानते थे वे स्वीकार करते हैं कि हिंसा की बात सभी धर्मों में कही गई है परंतु इसकी सर्वोच्च अभिव्यक्ति और प्रयोग थी उन्हें हिंदू धर्म में मिली है वह कहते थे कि हिंदू धर्म के अलावा ईसाई धर्म में और इस्लाम में भी अहिंसा सन्निहित है। [2] भारतीय राजनीति में गांधी जी का सक्रिय प्रादुर्भाव सन 1917-18 के दौरान हुआ जो मुख्यतः तीन स्थानिक समस्याओं पर आधारित था जिनमें चंपारण और, खेड़ा के कृषक विद्रोह तथा अहमदाबाद में मजदूरों की हड़ताल मुख्य थी। इन्हीं स्थानीय समस्याओं के परिणाम स्वरूप गांधी जी ने अपने सत्य व अहिंसा रूपी सत्याग्रह का प्रारंभ किया। अंततः इन्हीं स्थानीय संघर्षों के चलते गांधीजी संपूर्ण भारत में सत्य व अहिंसा के पुजारी के रूप में चर्चित हुए। गांधी का संपूर्ण जीवन सत्य पर ही आधारित रहा है जिसके अंतर्गत उनके सत्याग्रही रूपी आंदोलन आम जनमानस में शोषण के विरुद्ध अहिंसात्मक रूप से युद्ध करने की क्षमताओं का विकास करते हैं। गांधी जी के इन स्थानीय सत्याग्रहों का प्रमुख आधार अहिंसा रूपी सिद्धांत ही थे जिसमे गांधी जी ने कहा है कि- "जब कोई व्यक्ति अहिंसात्मक होने का दावा करता है तो उससे यह अपेक्षा की जाती है कि जिसने उसको हानि पहुंचाई है उससे वह गुस्सा भी नहीं होगा । वह उसके बुरे की कामना भी नहीं करेगा। वह उसकी अच्छाई चाहेगा और वह उसे किसी भी प्रकार का शारीरिक कष्ट नहीं देगा। बुरा करने वाला चाहे किसी भी प्रकार की हानि भी उसे पहुंचाएं वही उसे सह लेगा। अतः अहिंसा से अभिप्राय पूर्ण भोलेपन से है, अहिंसा से अभिप्राय किसी के प्रति बुरी भावना रखने का पूर्ण अभाव है। गांधी के अनुसार अहिंसा संसार की सबसे बड़ी और अधिक क्रियाशील, विद्युत से अधिक भावात्मक, आकाश तत्व से अधिक बलवान सभी शक्तियों के योग से भी अधिक शक्तिशाली जीवन की एक मात्र शक्ति है। अहिंसा श्रद्धा और अनुभूति का विषय, हृदय तथा आत्मा का गुण है।

गांधीजी की अहिंसा नीति कई अर्थों में आलोचनात्मक भी मानी जाती रही है जिसके आधारों में बोअर का युद्ध, जुलू विद्रोह तथा 1914 में प्रथम विश्व युद्ध रहे। अंग्रेजों की मदद के लिए भारतीय सेना को भेजना उनकी अहिंसात्मक नीति की निरर्थकथा पर बल देता है परंतु गांधी जी ने युद्ध के प्रति अपने दृष्टिकोण को यंग इंडिया में प्रकाशित किया है जिसमें उन्होंने अंग्रेजों को मदद करने के संबंध में स्पष्टीकरण दिया है कि - जिस शासन प्रणाली सेवर शासित थे उसकी शक्ति भर सहायता के लिए बाध्य थे । वे युद्ध में अपनी सेवाएं इसलिए नहीं दे रहे थे कि युद्ध में उनका विश्वास था वे यह नहीं मानते है कि युद्ध में भाग लेकर युद्ध से बचा जा सकता है क्योंकि गांधीजी हृदय परिवर्तन में विश्वास रखते थे उनका मानना था कि प्रथम विश्व युद्ध की पराजय का बदला लेने के लिए हिटलर पैदा हुआ इसका कोई अंत नहीं है। [8]

1939 के मार्च संकट के समय चेकोस्लोवाकिया के प्रश्न पर गांधीजी ने लोकतांत्रिक शक्तियों के लिए विश्व राजनीति के निशस्त्रीकरण की बात कही। जिसमे उन्होंने इंग्लैंड को अहिंसात्मक युद्ध करने को प्रेरित किया। गांधी जी अहिंसा को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रयोग का अस्त्र बनाना चाहते थे । जुलाई 1947 में इंडोनेशिया के राजदूत से बातचीत में गांधी ने कहा है "अहिंसा असंख्य अणुबमों का मुकाबला कर सकती है। अकेला इंडोनेशिया रूस, अमेरिका तथा इंग्लैंड का मुकाबला करने की सामर्थ्य पैदा कर सकता है।" महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय संबंधों में भी अहिंसा पर बल देना चाहते

थे । अहिंसा पर आधारित नैतिक मूल्यों के द्वारा ही स्थाई अंतरराष्ट्रीय शांति संभव हो सकती है। [7]

गांधीजी अहिंसा को वीरोचित गुण मानते हैं उनके अनुसार अहिंसा वीरों का गुण है जो निर्भयता के बिना असंभव है। अहिंसा को अपनी विवशता व कायरता के कारण नहीं बल्कि वीर इसे नैतिकता पर आधारित आंतरिक विश्वास के कारण स्वीकार करते हैं।

अहिंसा नीति की व्याख्या -

अहिंसा नीति की व्याख्या, गांधी जी के संदर्भ में करने पर ज्ञात होता है कि गांधीजी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उनके विचारों का केंद्रीय बिंदु सत्य प्रथा अहिंसा रहे हैं। गांधीजी ने अहिंसा को एक व्यापक वस्तु माना है जिससे न केवल राष्ट्र कल्याण ही सम्भव है अपितु संपूर्ण विश्व के कल्याण की कल्पना अहिंसा के माध्यम से ही की जा सकती है। भारत की स्वतंत्रता के आंदोलनों के दौरान गांधी के अहिंसा रूपी शस्त्रों ने विश्व भर में ख्याति प्राप्त की । उनके अंग्रेजी शासन की विरुद्ध किए गए सत्याग्रहों में विरोध प्रदर्शनों का आधार भी अहिंसा ही बना रहा। गांधीजी के अनुसार एक सच्चा अहिंसक वही है जो हिंसा के विरुद्ध भी हिंसा नहीं करता। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलनों में गरम दल तथा नरम दल की भूमिकाएं भिन्न-भिन्न रही जिनमें नरम दल का नेतृत्व करने वालों में महात्मा गांधी अग्रणी नेता थे गांधी जी का स्पष्ट कहना था कि मैं क्रांतिकारी की वीरता तथा बलिदान से इनकार नहीं करता लेकिन बुरे उद्देश्य के लिए प्रदर्शित वीरता और किया गया बलिदान उत्तम ऊर्जा का अपव्यय है। उनकी दृष्टि में है सरफ़रोशी की तमन्ना से भरकर फांसी के तख्ते पर झूल जाने की अपेक्षा भूखी जनता के बीच उसके सत्य धीरेधीरे- स्वेच्छा पूर्वक भुखमरी का शिकार होना ज्यादा वीरता पूर्ण कृत्य है। अतः कहा जा सकता है कि गांधीजी क्रांतिकारियों का तो आदर करते थे परंतु वे स्वतंत्रता के लिए हिंसा के समर्थन में नहीं थे। गांधीजी ने केवल अहिंसा का संदेश ही नहीं दिया बल्कि उन्होंने रचनात्मक तरीके से अहिंसा को जी कर भी दिखाया। गांधीजी ने रंगभेद, नस्लभेद, दासता, पराधीनता तथा शोषण आदि मामलों को अहिंसा द्वारा हल करने पर बल दिया। गांधीजी की राय में जब तक बड़े देश निशस्त्रीकरण करने का साहसपूर्ण निर्णय नहीं करेंगे तब तक शांति स्थापित नहीं हो सकती। उनके अनुसार, " मेरे हृदय में तो आधी सदी के निरंतर अनुभव और प्रयोग के बाद पहले कभी ऐसा विश्वास नहीं हुआ जैसा कि आज है कि केवल अहिंसा में ही मानव जाति का उद्धार निहित है।"

निष्कर्ष

इस प्रकार कहा जा सकता है कि गांधीजी की दृष्टि से सत्य के पश्चात, अहिंसा ही सर्वोत्तम सांसारिक शक्ति के रूप में विद्यमान है । इसी अहिंसा रूपी शक्ति का सहारा लेकर गांधी ने समाज देश तथा विश्व कल्याण हेतु निरंतर प्रयत्न किए तथा समस्याओं को हल करने में अद्वितीय सफलता प्राप्त की। विभिन्न विचारकों तथा धार्मिक ग्रंथो के प्रभाव क्षेत्र को गांधी जी के अहिंसा से जुड़े सिद्धांतो के रूप में साफ देखा जा सकता है। गांधी का अहिंसात्मक सिद्धांत इस बात की व्याख्या करता है कि किसी भी हिंसा की स्थिति में हिंसा ही उसका प्रत्युत्तर नहीं हो सकती इसके स्थान पर अहिंसा रूपी शस्त्र उसके विरोध प्रदर्शन का एकमात्र विकल्प होना चाहिए । संपूर्ण विषय वस्तु की समीक्षा करने पर यह भी ज्ञात होता है कि तत्कालीन ब्रिटिश शासन के विरुद्ध गांधी जी के अहिंसात्मक आंदोलनों ने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया जिसका स्पष्ट प्रभाव इन आंदोलनों की सफलता के रूप में देखा जा सकता है ।अहिंसा की उपलब्धियों के अंतर्गत मानव कल्याण के साथ साथ विश्व तथा भारत कल्याण की परिकल्पना को भी साकार किया जा सकता है।

संदर्भ सूची

1. महात्मा गांधी की प्रेरक कथाएं पृष्ठ 50
2. यंग इंडिया 20.10.1947 पृष्ठ 352
3. घनश्याम दास बिरला, 1975, मेरे जीवन में गांधी जी: गांधी के व्यक्तित्व तथा कृतित्व की एक झांकी, साहित्य मण्डल प्रकाशन पृष्ठ 24
4. वही पृष्ठ 80
5. वही पृष्ठ 83
6. रवीन्द्र कुमार, महात्मा गांधी और अहिंसा, कल्पाज पब्लिकेशंस, पृष्ठ 246
7. भारत की विदेश नीति के निर्धारक तत्व, विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा लि
8. गांधी की अहिंसा दृष्टि पृष्ठ 451